गगास

ई–पत्रिका, द्वि–मासिक

डॉ0 प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
भिकियासैंण, अल्मोड़ा

उत्तराखण्ड शासन

अंक–02 दिसम्बर 2024–जनवरी 2025

देवभूमि उत्तराखण्ड
Culture of Uttarakhand

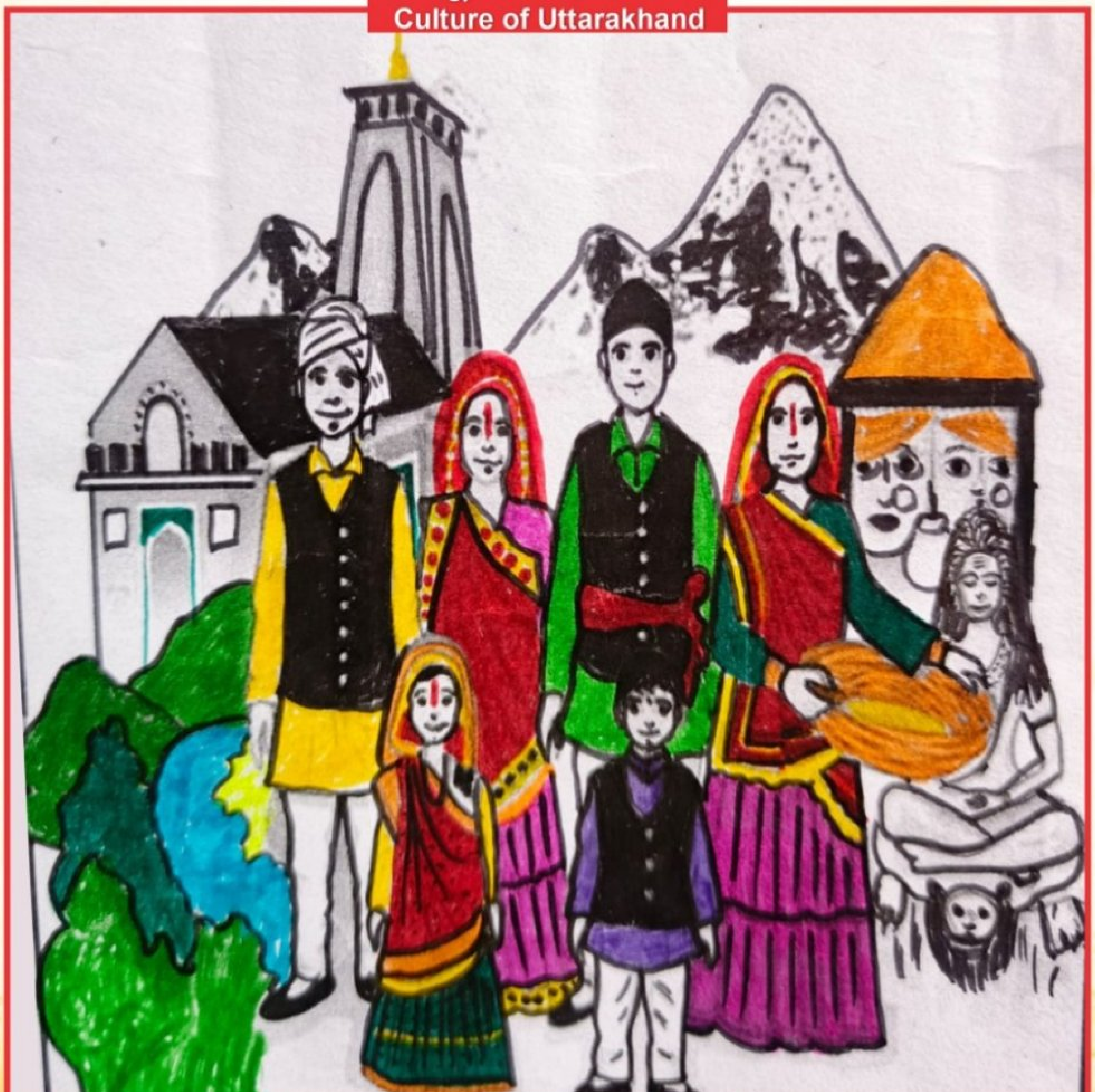

**छिप–छिप के अश्रु बहाने वालों, मोती व्यर्थ लुटाने वालों ।
कुछ सपनों के मर जाने से, जीवन नहीं मरा करता है ।** –गोपालदास नीरज

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

संपादक मंडल

संपादक

डॉ० इला बिष्ट
असि०प्रो०-समाजशास्त्र

सहसंपादक

1. रितु बिष्ट
बी.ए.पंचम सेमेस्टर
2. हिमांशु आर्या
बी.ए.पंचम सेमेस्टर

आवरण पृष्ठ

कार्तिक कुमार
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

तकनीकी सहयोग

श्री महेश बलोदी
पुस्तकालय लिपिक

सलाहकार

1 डॉ० दीपा लोहनी
असि०प्रो०-इतिहास
2 डॉ० सुभाष चन्द्र आर्या
असि०प्रो०-हिन्दी

संरक्षक

प्रो० शर्मिला सक्सेना
प्राचार्य,
डॉ० प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैण, अल्मोड़ा

-: विषयानुक्रमणिका :-

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	शुभकामना संदेश	1-3
2	सम्पादकीय	4
3	उपलब्धियाँ	5
4	विद्यार्थियो की कलम से	6-12
5	गुरु की लेखनी	13-17
6	आमंत्रण	18-20
7	लक्ष्य गीत : राष्ट्रीय सेवा योजना	21
8	प्रार्थना गीत : भारत स्काउट गाइड	22
9	झरोखा	23
10	अखबार से	24
11	मीमांसा	25
12	महाविद्यालय परिवार	26-27
13	इनफॉरमेशन डेस्क	28

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट
कुलपति

मो0– +91 7579138434
ईमेल– vcssju@gmail.com

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण (अल्मोड़ा) द्वारा 'गगास़' शीर्षक से द्विवार्षिक ई पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जो सराहनीय पहल है। प्राचीनकाल से ही यह पर्वतीय राज्य वैश्विक पटल पर चर्चा के केंद्र में रहा है। इस प्रदेश का प्रत्येक क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहरों के लिए जाना जाता है। इसी प्रदेश के कुमाऊँ संभाग में स्थित भिकियासैण भी अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को लेकर प्रसिद्ध है। इन क्षेत्रों में मनाए जाने वाले मेले, पर्व ऐतिहासिक स्थल जनमानस को जोड़कर रखते हैं। आज जिस तरह से हम प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं, ऐसे में ये गौरवशाली धरोहरों के प्रति हमारा लगाव कम हुआ है। जबकि इन धरोहरों के बल पर ही यह देश विश्वपटल पर सुशोभित रहा है। आज अपने आस–पास के क्षेत्र के गौरवशाली इतिहास, पुरातत्त्व, परंपरा एवं संस्कृति को संरक्षित करने और इनके बारे में हमारे विद्यार्थियों को जानकारी देने की आवश्यकता है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास भी है कि 'गगास़' ई पत्रिका अपनी जड़ों से जुड़ने के साथ–साथ युवाओं में रचनात्मक क्षमताओं के विकास करने के लिए भी लाभदायी सिद्ध होगी।

मैं 'गगास़' ई पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य, पत्रिका से जुड़े सभी सदस्य एवं विद्यार्थियों को शुभकामना देता हूं।

19 दिसंबर, 2024

(प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट)
कुलपति

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड
हल्द्वानी - 263139 (नैनीताल)
उत्तराखण्ड राज्य
E-mail-highereducation.director@gmail.com

डॉ0 आर0एस0 भाकुनी
उपनिदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक - 5810 / 2024-25
दिनांक - 15 फरवरी, 2025

शुभ संदेश

महोदय,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आपका महाविद्यालय अपनी पत्रिका "गगास" का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामाग्री प्रकाशित की जायेगी जिसमें छात्रों का सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन-दर्शन कार्य संस्कृति और अध्ययन रूचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आयेगा। छात्र-छात्राओं को अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

"गगास" पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य सम्पादक मण्डल प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को मेरी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित ।

(डा0 आर0एस0 भाकुनी)

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

प्रान्तीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल

व्यापार संघ भिकियासैंण, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

Mob. 9411131333, 9411337788

महिपाल सिंह बिष्ट (अध्यक्ष)

पत्रांक.................. दिनांक..................

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है, कि डॉ० प्रताप बिष्ट, राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण (अल्मोडा) कि द्वि-मासिक ई-पत्रिका "गगास" का अंक-02 प्रकाशित होने जा रहा है।

यह एक सराहनीय प्रयास है जिसके माध्यम से शिक्षकों, विद्यार्थियों की सृजन क्षमता में वृद्धि होगी और साथ ही पत्रिका के सभी आलेख समाज के लिए ज्ञानवर्धक होंगे।

इस प्रयास के लिए मैं समस्त महाविद्यालय परिवार की सराहना करता हूँ एवं अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(महिपाल सिंह बिष्ट)

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

सम्पादकीय

ई–पत्रिका "गगास" के प्रथम अंक के प्रकाशन के पश्चात यह गर्व का विषय है कि द्वितीय अंक का प्रकाशन भी शीघ होने जा रहा है। इस ई पत्रिका के माध्यम से गुरूजनों एवं विद्यार्थियों की कल्पनात्मकता रचनात्मकता, क्रियात्मकता, लेखन व मानसिक क्षमता में वृद्धि होगी। यह पत्रिका एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से वे अपने विचारों को अन्य लोगों से सांझा कर पायेंगे।

डॉ0 इला बिष्ट,
सम्पादक, ई–पत्रिका गगास
असि0 प्रो0 समाजशास्त्र

हिमांशु आर्या
सहसंपादक, ई-पत्रिका गगास
बी०ए० पंचम सेमेस्टर

रितु बिष्ट
सहसंपादक, ई-पत्रिका गगास
बी०ए० पंचम सेमेस्टर

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

उपलब्धियाँ

माह – दिसम्बर 2024

दिनांक-2 दिसम्बर 2024
महाविद्यालय में विज्ञान संकाय के तत्वाधान में मनाया गया विश्व कम्प्यूटर दिवस ।

दिनांक-9-10 दिसम्बर 2024
महाविद्यालय के छात्रों ने सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के तत्वाधान में आयोजित अन्तर महाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग के अन्तर्गत किया उत्कृष्ट प्रदर्शन।

दिनांक-13 दिसम्बर 19 दिसम्बर 2024
महाविद्यालय में आयोजित हुआ महालेखाकार (CAG) का ऑडिट ।

दिनांक-16 दिसम्बर 2024
महाविद्यालय में अग्निशमन जागरूकता कार्यकम का हुआ आयोजन ।

दिनांक-17 दिसम्बर 2024
स्पर्श गंगा दिवस के अवसर पर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई केतत्वाधान में एक दिवसीय सामान्य शिविर का किया गया आयोजन।

दिनांक-26 दिसम्बर 2024
महाविद्यालय में एन०एस०एस० इकाई के तत्वाधान में वीर बाल दिवस के अवसर पर किया गया कार्यकम का आयोजन ।

माह – जनवरी 2025

दिनांक-10 जनवरी 2025
महाविद्यालय की एन०एस०एस० इकाई के अन्तर्गत स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर एक व्याख्यान माला का किया गया आयोजन।

दिनांक-10 जनवरी 2025
महाविद्यालय में भूगोल विभाग के अन्तर्गत सतत् विकास में युवा कौशल विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का किया गया आयोजन ।

दिनांक-30 जनवरी 2025
महाविद्यालय के भूगोल विभाग में नियुक्त हुए स्थायी प्राध्यापक डॉ० पारितोष उप्रेती ।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

लेख

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया संचार का एक इंटरनैट आधारित रूप है। सोशल मीडिया की बात करें तो यह समाज में एक अत्यधिक लोकप्रिय जनसंचार का साधन बन गया है। हर कोई सोशल मीडिया का उपयोग कर रहा है तथा सोशल मीडिया का लाभले रहा है। शहरी क्षेत्रों में तो सोशल मीडिया लोकप्रिय है ही लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों की बात करें तो ग्रामीण क्षेत्रों में भी सोशल मीडिया का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। सोशल मीडिया से पहले तथा आज की ग्रामीण स्थिति की तुलना करें तो सोशल मीडिया ने ग्रामीण क्षेत्रों का स्वरूप ही बदल दिया है। जहां पहले ग्रामीण जीवन बहुत कठिन होता था तथा सारे काम खुद बिना किसी उपकरण के किये जाते थे उक्त कार्यों में बहुत समय बर्बाद होता था। ग्रामीण समाज के लोग जागरूक नहीं थे लेकिन जबसे सोशल मीडिया का ग्रामीण क्षेत्रों में विकास हुआ है तब से ग्रामीण लोगों ने अपने अधिकतम् कार्य इन्टरनैट की सहायता से करने शुरू कर दिये हैं। जैसे- बिजली का बिल भरना, पानी का बिल भरना, संदेश भेजना, आंनलाईन पेमेंट करना, आंनलाईन शौपिंग आदि कार्यों को ग्रामीण क्षेत्रों में भी आसानी से आंनलाईन माध्यम से किया जा रहा

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति पर सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। जैसे- सोशल मीडिया से युवाओं को दोस्तों और परिवार से जुड़ने में मदद् मिलती है। युवा अपने हुनर को दुनियां तक पहुंचा सकते हैं। युवाओं को नये कौशल सीखने में मदद मिलती है। इंटरनैट के माध्यम से युवा रोजगार सम्बन्धी जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं। सोशल मीडिया पर विभिन्न लाभकारी जानकारियां भी उपलब्ध हैं। किसी महत्वपूर्ण जानकारी को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का एक सरल माध्यम सोशल मीडिया बन गया है। सोशल मीडिया पर मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक चीजें भी उपलब्ध हैं जो कि अत्यन्त लाभकारी हैं। लोग सोशल मीडिया के माध्यम से दूर रहकर भी अपने परिवार से जुड़े रहते हैं। युवा सोशल मीडिया से रोजगार सम्बन्धी जानकारियां भी प्राप्त करते हैं। सोशल मीडिया के विकास से अब आंनलाईन व्यवसाय सम्बन्धी या अन्य कार्य किये जा रहे हैं। आज के इस आंनलाईन युग में लोग अपने ज्यादातर कार्य घर बैठे ही कर सकते हैं। सोशल मीडिया पर नई हुनर सीखे जा रहे हैं। इसके माध्यम से युवाओं को नये व्यवसाय के अवसर तलाशने का मौका मिल रहा है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

जहां एक ओर सोशल मीडिया के बहुत सारे सकारात्मक प्रभाव हैं वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव भी हैं। सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से व्यक्ति को उनकी लत लग जाती है। सोशल मीडिया से युवा दूरी बना लेते हैं। जिससे उनमें चिन्ता, अकेलापन जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। सोशल मीडिया पर गलत कंटेंट देखने से व्यक्ति पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है और कई बार तो यह भी देखा गया है कि इससे प्रभावित होकर व्यक्ति आत्महत्या जैसे कदम भी उठा लेता है। सोशल मीडिया के द्वारा किसी भी व्यक्ति की छवि खराब की जा सकती है जिसे साईबर काईम कहते हैं। कई बार युवाओं को सोशल मीडिया पर साईबर बुलिंग का सामना भी करना पड़ता है। युवा सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करते हैं जिससे उनकी समय की बर्बादी होती है। सोशल मीडिया पर गलत विडियोज, तसवीरें तथा अफवा आसानी से फैलायी जा सकती हैं। सोशल मीडिया पर धोखाधड़ी का चलन भी बढ़ गया है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव से बचने के उपाय

जहां एक ओर सोशल मीडिया के सकारात्मक पक्ष हैं वहीं दूसरी तरफ नकारात्मक पक्ष भी हैं। सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों से बचने में निम्नलिखित उपाय प्रभावी हैं।

हमें सोशल मीडिया को उपयोग करने के लिये एक समय सीमा तय करनी चाहिए। जब कोई कार्य करें तो नोटिफिकेशन कुछ टाईम के लिये बन्द कर दें। नोटिफिकेशन अधिक ध्यान भटकाते हैं। अपनी स्कीन टाईम को ध्यान में रखते हुए स्कीन टाईम का समय न्यूनतम् रखने का प्रयास करें। रीललाईफ के बजाय रियललाईफ पर ज्यादा ध्यान दें। इससे व्यक्ति अपने समाज से जुड़ा रहता है। ऐसे लोगों को फालो न करें जो गलत जानकारी या वीडियो फैलाते हैं या जिनकी वीडियो देखने और सुनने के बाद आप अच्छा महसूस नहीं करते हैं। अपने से सम्बन्धित जानकारी को प्राईवेट रखने का प्रयास करें। बच्चों के लिये स्कीन टाईम की सीमा निर्धारित करना आवश्यक है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

आज के समय में सोशल मीडिया जितना खतरनाक है उतना की इसके फायदे भी हैं। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम सोशल मीडिया के जाल में न फसें तथा इसका सदुपयोग करें। आज के समय में लोगों को साईबर क्राईम के प्रति जागरूक होना अति आवश्यक है। लोग दूसरों की जानकारी का गलत उपयोग कर लेते हैं। जिससे व्यक्ति साईबर क्राईम से प्रभावित हो जाता है। इसके लिये समाज में साईबर क्राईम के प्रति लोगों को जागरूक करना अति आवश्यक है। आज भी कई ऐसे ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां शोसल मीडिया का उपयोग तो होता है लेकिन उन्हें साईबर क्राईम के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है।

अतः साईबर क्राईम से बचने का सबसे प्रभावशाली तरीका यह है कि प्रत्येक व्यक्ति इसके बारे में जागरूक रहे।

पूजा बिष्ट

बी.ए.पंचम सेमेस्टर

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

लेख

प्रेरक कहानी
आशावादी और निराशावादी सोच

एक गांव में एक किसान रहता था। उसे जानवरों से बहुत प्यार था। इसलिये उसने घर में बहुत सारी गाय और भैंसें पाल रखी थी। उन्हीं का दूध बेचकर वह अपना जीवन यापन करता था। एक बार किसान ने एक कुत्ते और खरगोश को भी पाल लिया। कुछ दिन बाद उसके मन में इन दोनों के साथ खेलने का विचार हुआ। इस विचार से वह दोनों को एक खेत में लेकर गया और उसने खेत में बहुत सारे छेद कर दिये। उन्हीं में से एक छेद में हड्डी और गाजर छिपा दी।

अब उसने कुत्ते और खरगोश को बुलाकर कहा कि- तुममें से जो भी पहले हड्डी और गाजर को ढूंढ कर लायेगा, उसे मैं इनाम दूंगा। खरगोश बहुत ही आशावादी था, उसे पूरी उम्मीद थी कि वह हड्डी और गाजर ढूढ ही निकालेगा। वहीं कुत्ता बहुत ही निराशावादी था, वह मन ही मन सोच रहा था कि यह क्या मजाक है ? इतने बड़े खेत में भला कोई हड्डी और गाजर कैसे ढूंढ सकता है। यही सोचकर कुत्ता खेत में बने एक बड़े गड्ढे के पास बैठ गया।

वहीं खरगोश पूरे जोश के साथ खेत में गाजर ढूढने में लग गया। उसने एक-एक करके सारे छेद देखे लेकिन उसे गाजर और हड्डी नहीं मिले। फिर उसने कुत्ते को आराम से एक गड्ढे के पास बैठा देखा और सोचा कि बस यहीं एक गड्ढे को देखना छूट गया है। अब वह उसी गड्ढे में हड्डी और गाजर ढूढने लगा। और संयोग से वहीं ये दोनों चीजें उसे मिल गयी। अब तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था।

कुत्ते की निराशावादी सोच ने उसे बड़े आराम से हारने दिया। कुत्ते ने आखिर पहले ही मान लिया था कि इतने बड़े मैदान में हड्डी और गाजर नहीं मिल सकती और इसलिये उसने कोशिश तक नहीं की।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

इस कहानी का निष्कर्ष यह निकलता है कि हममें से कई लोग इस तरह की निराशावादी सोच के कारण प्रयास करने से डरते हैं और कठिनाईयों से भागते हैं। जबकि हो सकता है कि समस्या का समाधान बिल्कुल हमारे करीब ही हो। इस कहानी के माध्यम से हम खुद का पता भी लगा सकते हैं कि हम आशावादी हैं या निराशावादी ।

हिमांशु आर्या

बी०ए० पंचम सेमेस्टर

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Short story

" The Gift of the Magi"

The Gift of the Magi," by O. Henry, is a short story brimming with irony and heartwarming sentiment. It centers around a young, deeply in love, and desperately poor couple, Della and Jim, at Christmastime. Their financial straits are dire; they barely have enough money to cover basic necessities, let alone purchase presents for each other.

Della's most prized possession is her long, flowing hair. It's a source of pride and beauty for her. Jim, in turn, cherishes his gold pocket watch, a family heirloom. These two possessions become central to the story's plot.

On Christmas Eve, Della is overcome with the desire to give Jim a special gift. She's heartbroken that she can't afford anything worthy of him. In a moment of desperation, she makes a profound sacrifice: she sells her beautiful hair for $20. With the money, she buys a platinum watch chain for Jim's pocket watch, a perfect, elegant complement to his prized possession. She's thrilled with her purchase, imagining Jim's delight.

Meanwhile, Jim has also been struggling with the same dilemma. He loves Della and wants to give her something special for Christmas. He makes his own significant sacrifice. He sells his beloved pocket watch to buy a set of exquisite tortoise shell combs, adorned with jewels, that Della has long admired in a shop window. He envisions her using them to adorn her beautiful hair.

The climax of the story occurs when Della and Jim exchange gifts. Della, beaming with pride, presents Jim with the platinum watch chain. Jim, in turn, gives Della the combs. The irony hits them both simultaneously. Della has cut off her hair, making the combs useless. Jim has sold his watch, rendering the chain pointless.

This ironic twist is the heart of the story. Both Della and Jim have sacrificed their most prized possessions for the sake of the other, only to have their gifts become functionally irrelevant. However, the true message of "The Gift of the Magi" lies not in the material gifts themselves, but in the profound love and selfless sacrifice that motivated them. The story emphasizes that their love for each other is far more valuable than any material possession. It's a poignant reminder that the

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

spirit of giving lies in the thought and love behind the gift, not in the gift itself. The story concludes with a comparison to the Magi, the wise men who brought gifts to the baby Jesus. Just as the Magi gave their most precious possessions, so too did Della and Jim, demonstrating the ultimate gift of love

(Compiled)

PRESENTED BY

Sumit Bisht

B.A. 4th Semester

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

उत्तराखण्ड विशेष

जीवनदायिनी रामगंगा नदी : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृष्य

भूमि की उपरी सतह पर प्रवाहित वह जलधारा जो किसी प्राकृतिक स्रोत यथा हिमनद, झरना अथवा झील आदि से निकलती है, नदी कहलाती है। गंगा, यमुना, रामगंगा, ब्रह्मपुत्र, सिंधु, कोसी, गोदावरी, सरयू आदि नदियों के उदाहरण हैं। इनकी जलधारा अपने प्रवाह मार्ग में आने वाले समस्त जीव-जंतुओं के पोषक एवं जीवनरक्षक की भूमिका अदा करती है। यही कारण है कि इन्हें प्रकृति प्रदत्त जीवनदायिनी संसाधन के रूप में जाना जाता है। मानव सहित जीव-जंतुओं एवं पेड़-पौधों के पोषण एवं उनके अस्तित्व को बनाये रखने में जल की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। सामाजिक जीवन में प्रचलित कहावतें 'जल ही जीवन है' इसके इसी जीवनदायिनी स्वरूप को चित्रित करती है तथा इसी स्वरूप के कारण ही अधिकांश नदियों की पूजा की परंपरा वैदिक साहित्यों में परिलक्षित है।

नदियों ने न केवल मानव, जीव-जंतु एवं पेड़-पौधों के अस्तित्व को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है बल्कि मानव सभ्यता के विकास क्रम में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न ऐतिहासिक एवं धार्मिक ग्रंथों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि नदियों के किनारे विभिन्न सभ्यताओं का विकास हुआ, जिसका मूल कारण कृषि कार्य हेतु जल की उपलब्धता तथा व्यापार एवं यातायात की सुगमता रही है। सिंधु नदी किनारे विकसित हड़प्पा सभ्यता, नील नदी किनारे विकसित मिस्र की सभ्यता तथा दजला-फरात नदी किनारे विकसित मेसोपोटामिया की सभ्यता आदि नदी किनारे विकसित नदी घाटी सभ्यताओं के उदाहरण हैं, जो आज भी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत की अप्रतिम मिसाल है।

रामगंगा नदी भी भारत की प्रमुख नदियों में से एक है, जो उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से प्रवाहित होते हुए अंत में गंगा नदी में मिल जाती है। इसी कारण इस नदी को गंगा नदी की एक महत्वपूर्ण सहायक नदी के रूप में जाना जाता है। इसका उद्गम उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले में दूधतोली पहाड़ी की दक्षिणी ढलानों में होता है। रामगंगा नदी का स्रोत जिसे 'दिवालीखाल' कहा जाता है, गैरसैंण (चमोली) के नजदीक से होकर प्रवाहित होती है, हालांकि गैरसैंण नगर इससे काफी ऊंचाई पर स्थित है। यह चौखुटिया तहसील जनपद अल्मोड़ा में एक गहरी और संकरी घाटी द्वारा कुमाऊँ के जनपद अल्मोड़ा में प्रवेश करती है। यहां से यह दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ती है और लोहाबागढ़ी की दक्षिण-पूर्वी सीमा के चारों ओर व्यापक रूप से घूमते हुए तड़ागताल नदी को प्राप्त करती है। इसके बाद यह उसी दिशा में आगे बढ़ती है और गनाई पहुंचती है, जहां इसमें दूनागिरी से निकली खरोगाड़ बाई ओर से और पंडनाखाल से आयी खेतासारगढ़ दाई ओर से आकर मिलती है। गनाई से निकलकर यह तल्ल गेवाड़ क्षेत्र की ओर बहने लगती है, जहाँ नदी के किनारे और आसपास समृद्ध भूमि के साथ एक खुली घाटी है जहाँ बड़े पैमाने पर खेती और इसी नदी के जल से सिंचाई होती हैं। मासी के बाद घाटी कुछ हद तक सिकुड़ती है, लेकिन अभी भी वृद्धकेदार मंदिर तक कुछ उपजाऊ मैदान मिलते हैं। वृद्धकेदार के पास ही इसमें चौकोट से निकली विनोद नदी आकर मिलती है, और इस बिंदु से आगे नदी का बहाव दक्षिण दिशा की ओर हो जाता है, और इसके दोनों ओर उपजाऊ मिट्टी के ढेरों और चट्टानों से मरे खड़े पहाड़ दिखाई देने लगते है।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

भिकियासैंण जो जनपद अल्मोड़ा की एक महत्वपूर्ण तहसील एवं नगरीय क्षेत्र है, इसी नदी किनारे अवस्थित है। यहां इसमें पूर्व की ओर से गगास और दक्षिण की ओर से नौरारगाड़ आकर मिलते हैं। भिकियासैंण से नदी पश्चिम की ओर एक तीव्र मोड़ लेती है और सल्ट से नेल और गढ़वाल से देवगाड़ का पानी प्राप्त करती है। मरचूला पुल के बाद से कुछ दूर तक यह अल्मोड़ा और पौड़ी गढ़वाल जिलों की सीमा बनाती है। इसके बाद यह भाबर में प्रवेश करती है और पतली दून से पश्चिम की ओर बहते हुए जिम कॉर्बेट, राष्ट्रीय उद्यान में प्रवेश करती है। बिजनौर जनपद जो उत्तर प्रदेश राज्य का एक प्रमुख जनपद है उसके कालागढ़ क्षेत्र में यह नदी उत्तर प्रदेश की सीमा में प्रवेष करती है। बरेली जिले में रामगंगा पश्चिम की ओर से प्रवेश करती है और दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ती है। कुछ दूरी पर ही इसमें भाखड़ा और किच्छा की संयुक्त धारा आकर मिलती है। इसके बाद यह बरेली नगर के समीप पहुँचती है, जो इसके बाई ओर स्थित है। यहाँ इसका संगम देवरनियाँ और नकटिया नदियों से होता है। दोनों नदियाँ बरेली नगर से होकर बहती हैं। बरेली के समीप चौबारी गाँव में सितंबर-अक्टूबर माह में गंगा दशहरा के अवसर पर नदी के तट पर वार्षिक मेला आयोजित किया जाता है। यहां क्षेत्र की नौकाओं के लिए बारिश के दौरान यह नौगम्य हो जाती है, लेकिन सूखे के मौसम के दौरान इसका उपयोग नहीं किया जा सकता है। बदायूँ, शाहजहाँपुर में बहती हुई यह जलालाबाद में जाकर अधिक बोझ वाली नौकाओं के लिए नौगम्य हो जाती है। इसके बाद यह हरदोई जिले में आ जाती है और अंत में लगभग 373 मील का कुल सफर तय करने के बाद कन्नौज के विपरीत गंगा नदी में मिल जाती है। अपने इस लम्बे पर्वतीय एवं मैदानी प्रवाह मार्ग में अनेक नगरों, ग्रामों को जलापूर्ति कर उस क्षेत्र को जीवनगत परिस्थितियों के अनुकूल बनाती है।

रामगंगा नदी के प्रवाह मार्ग पर बसे ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के विकास, पोषण एवं वहां की सांस्कृतिक विरासत पर गहरा प्रभाव परिलक्षित है। इस नदी के उल्लेख विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में मिलता है। स्कंद पुराण के मानसखण्ड में इस नदी को 'रथवाहिनी नाम से संबोधित किया गया है। कुछ पौराणिक ग्रंथों एवं ऐतिहासिक साहित्यों में इस नदी को आदि गंगा के नाम से भी संबोधित किया गया है, जिसके पीछे की किंवदंतियां राम के वनवास गमन से जुड़ी बताई जाती है। एक अन्य किंवदंतियों के अनुसार इस नदी का उद्गम स्थल के निकटवर्ती पर्वत पर परशुराम की तपोभूमि रही है। इस कारण परशुराम के नाम पर ही इस नदी का नाम रामगंगा नदी पड़ा है।

रामगंगा नदी का इतिहास पौराणिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अत्यन्त समृद्धशाली एवं गौरवमयी है। स्कंद पुराण के मानसखण्ड में भी इस बात का जिक्र देखने को मिलता है कि द्रोणागिरी यानी दूनागिरी के दो श्रृंगों ब्रह्मपर्वत व लोध्र पर्वत (मटकोट) के मध्य से रामगंगा (रथवाहिनी) का उद्गम होता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, लोध्र-पर्वत यानी मटकोट शिखर ऋषि मुनियों की तपोभूमि रही है। इस नदी के किनारे कई प्राचीन नगर और तीर्थस्थल स्थित हैं, जो इनकी सांस्कृतिक विरासत के परिचायक हैं। नदी के किनारे बसे महत्वपूर्ण स्थलों में गैरसैंण, चौखुटिया, मासी, भिकियासैंण, मरचुला, मुरादाबाद, बरेली, शाहजहाँपुर, बदायूँ, हरदोई, और कन्नौज आदि प्रमुख हैं। इन नगरों का इतिहास रामगंगा नदी से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस नदी तट पर बसे धार्मिक स्थलों तथा आयोजित होने वाले मेलों का अपना विशेष महत्व रहा है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

रामगंगा नदी के तट पर स्थित मंदिर एवं धार्मिक स्थल जो आस्था का प्रमुख केन्द्र है उनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है

1.भूमियादेवी मंदिर - जनपद अल्मोड़ा के मासी स्थित भूमिया देवी मंदिर स्थानीय जनों के आस्था एवं विश्वास का प्रतीक है। इन्हें ग्राम की रक्षा करने वाली देवी के रूप में जाना जाता है। फसल की रक्षा तथा समाज की समृद्धि के दृष्टिगत इनकी पूजा की जाती है।

2. वृद्धकेदार मंदिर (उत्तराखंड)- जनपद अल्मोड़ा में मासी भिकियासैण मोटर मार्ग पर स्थित यह मंदिर शिव भक्तों के लिए महत्वपूर्ण आस्था का केन्द्र है। इस मंदिर में श्रावण मास एवं महाशिवरात्रि के अवसर पर श्रद्धालु विशेष रूप से पूजा-अर्चना करने आते हैं। पौराणिक दृष्टिकोण से इस मंदिर की यह मान्यता है कि यहां भगवान शिव अपने वृद्ध स्वरूप में विराजमान है।

3. रुद्रेश्वर महादेव मंदिर- यह मंदिर उत्तराखण्ड के जनपद अल्मोड़ा के भिकियासैंण क्षेत्र में अवस्थित है। यह मंदिर शिव को समर्पित महत्वपूर्ण धार्मिक आस्था का केन्द्र, पौराणिक महत्व तथा प्राकृतिक सुन्दरता का अनुपम चित्र प्रस्तुत करती है।

4.निलेश्वर महादेव - आस्था का केन्द्र निलेश्वर महादेव मंदिर जनपद अल्मोड़ा के भिकियासैंण में स्थित है। इस मंदिर में भगवान नीलेश्वर महादेव के उस स्वरूप की पूजा की जाती है जिसमें उन्होंने समुद्र मंथन के समय हलाहल विष का पान किया था।

इन मंदिरों के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश में बिजनौर से कन्नौज तक (गंगा में मिलने से पूर्व) अनेक मंदिरों एवं धार्मिक आस्था के केन्द्रों की स्थापना की जा चुकी है। शिव, विष्णु सहित अन्य देवी देवताओं की पूजा अर्चना इस क्षेत्र विशेष में श्रद्धापूर्वक की जाती है। इसके अतिरिक्त रामगंगा नदी के किनारे अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक मेले तथा उत्सवों का भी आयोजन किया जाता है। सोमनाथ मेला, गंगा दशहरा मेला, कार्तिक पूर्णिमा स्नान्, श्रावण मास का शिव अभिषेक आदि अनेक ऐसे मेलों का आयोजन किया जाता है, है, जो स्थानीय संस्कृति की संरक्षक, संवाहक एवं प्रचारक सिद्ध होती है।

रामगंगा नदी का प्रवाह पथ तथा प्रवाह मार्ग के किनारे बसे ग्रामीण क्षेत्रों, नगरों एवं धार्मिक स्थलों के संदर्भ में वर्णित तथ्य इनकी पौराणिकता एवं सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र में इनकी प्रासंगिकता का परिचायक है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि यह नदी अपने किनारे बसे क्षेत्रों के लिए प्रकृति की अनुपम देन है, जिसे संरक्षित करना एवं इसे स्वच्छ बनाये रखना हमारी सांस्कृतिक विरासत को बचाये रखने की दिशा में अप्रतिम कदम सिद्ध होगी।

डॉ0 दीपा लोहनी
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
डॉ0 प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

असफलता अन्तिम नहीं होती

12 फरवरी, 1809 को अमेरिका में केंटकी प्रान्त के होडगेनविले नामक स्थान में एक निर्धन परिवार में एक बालक का जन्म हुआ। उसके पिता बुनकर के प्रशिक्षु के वंशज थे, 9 साल की उम्र में उसकी माँता की मृत्यु हो गयी। आर्थिक समस्या होने के कारण वह बालक नियमित रूप से विद्यालय नहीं जा पाता था। 1816 में उस बालक का परिवार दक्षिण पश्चिमी इंडियाना चला गया। वहां उन्होंने एक कच्चा शिविर बनाया, एक तरफ खुली और टहनियों का कच्चा घर बनाया। वह बालक अपने पिता के साथ खेतों में काम करता और फसलों की देखभाल करता था। वह बालक उधार किताब लेने कई मील पैदल जाता था। वह बालक समय के साथ बड़ा हुआ, लम्बे कद का किन्तु दुबले-पतले शरीर का था। वह कुल्हाड़ी चलाने की कुशलता के लिये जाना जाने लगा। बालक के भाई की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी। विवाह के पश्चात् उसकी बहन की प्रसव वेदना से मृत्यु हो गयी। उस बालक का जीवन दुःख और अवसाद में ही बीता। न्यूसलेम में रहते हुए उसकी मुलाकात एन० रटलेज से हुई, वह उसे प्रेम करने लगा किन्तु शीघ्र ही उसकी प्रेमिका की मृत्यु हो गयी। कुछ समय अवसाद में रहने के बाद उसे मैरी टॉड से प्रेम हुआ किन्तु वह प्रतिष्ठित परिवार की होने के कारण उसके परिजनों ने उस प्रेम को स्वीकार नहीं किया। अतः इनकी सगाई टूट गयी। पुनः वह अवसाद व निराशा से अभिभूत हुआ। किन्तु 1842 में इनकी सुलह हुई और विवाह हुआ। इनके चार पुत्र हुए किन्तु युवावस्था तक एक की पुत्र जीवित रहा। सन् 1832 में विधायक का चुनाव लड़े और हार गये। सन् 1823 में व्यापार करना शुरू किया किन्तु असफल हुए। सन् 1838 में फिर विधानसभा का चुनाव लड़ा और पुनः हार गये। सन् 1843 में कांग्रेस के लिये चुनाव लड़ा और हार गये। सन् 1848 में पुनः कांग्रेस के लिये चुनाव लड़ा और हार गये। 1855 में सीनेटर बनने की दौड़ में पुनः हार गये। 1856 में उपराष्ट्रपति पद के लिये रिपब्लिक पार्टी की ओर से चुनाव लड़ा किन्तु हार गये 1859 में अमेरिकी सीनेट के लिये पुनः हार गये।

वह बालक था अमेरिका का 16 वां राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन, उनका कार्यकाल सन् 1861 से 1865 तक रहा। अब्राहम लिंकन को अमेरिका का गृहयुद्ध से पार लगाने का श्रेय दिया जाता है। अब्राहम लिंकन ने दास प्रथा का अन्त किया। प्रजानन्त्र जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिये शासन है यह लोकतन्त्र की प्रसिद्ध परिभाषा अब्राहम लिंकन ने ही दी है।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

लिंकन के संघर्षमय जीवन से हमें शिक्षा लेनी चाहिये कि हमें मुश्किलों से भागना नहीं चाहिये, वरन् डटकर उसका सामना करना चाहिये। असफलताएं मिलती हैं किन्तु वह अन्तिम नहीं होती, उसके बाद सफलता भी अवश्य मिलती है। कहा भी गया है-

करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान।
रस्सी आवत-जात ते सिल पर पड़त निशान ।।

डॉ० सुभाष चन्द्र आर्य,
असि० प्रो० हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

आमंत्रण

"Embrace Change: Celebrate Resilience"

Dr Radhakrishnan, a great educationalist of international repute had firm faith that "Education to be complete, must be human, it must include not only training of intellect but refinement of the heart and discipline of the spirit. No education can be regarded as complete if it neglects heart and spirit" New National Educational Policy 2022 exactly follows the spirit of this great teacher. The old system of educationmarked by 10+2 structure had less opportunities of entry and exit and thus had proved outdated. The new NEP structure is more democratic in its ideals as it is based on the four cardinal principles of Access, Equality, Quality and Accountability which concerns not only the interests and concerns of students but also those of teachers. India being a vast country comprises a large number of dropouts after primary education owing to yawning gaps in the economic status of children, needed primal focus on universal access at all levels of school education, it has been ensured by the NEP 2022,by employing Anganwadi workers for pre-school/Bal -vatika for giving multilevel play/activity-based learning to children from 3-6 years. After the 5 years of Foundational stage when the learner is about 8 years, he will be all setfor activity based class learning of the Preparatory stage(age 8-11).It will again prepare him as an inquisitive and enthusiastic learner for the ensuing Middle stage(age 11-14) and Secondary stage.(age14-18).This new pedagogical and curricular structure of school education (5+3+3+4), will produce an adult who can make his own choices for higher education. In a drastic change, the NEP 2022 has made a call for embracing change and celebrating resilience. It has become imperative to change the existing school curricula and pedagogy as per the need of the hour. It has its primal focus on Early Childhood Care and Education (ECCE).It has also established the present government 's commitment towards attaining Foundational Literacy and Numeracy (FLN). The emphasis on activity based learning in school education would discourage rote learning and promote learning by practice that would sharpen the imaginative and creative potentialities of the learners and the burden of books and bags will be replaced by creative learning.

In a similar way. New National Educational Policy has proved a boon for aspirants of Higher Education. Its salient features like Credit Based semester system, Choice Based Credit System, Internal Exams, several points of Entry and Exit and Inter and Intra Discipline studies, have made entire Higher Education more student friendly and purposive in its goals.

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

CREDIT BASED SEMESTER SYSTEM ENSURES SCHEDULED COMPLETION OF COURSES: It was observed in the old system that syllabus was designed for the whole year, students and teachers remained slack in the early months of the academic session and at the fag end of the session, the momentum of teaching and learning took place, the length of session and the repetition /revision created a sort of boredom and lack of interest among the learners.In Semester system, maximum of syllabus is taken up by teachers in minimum of time as there is a schedule of examinations and pressure of commencing next semester timely .A new syllabus for every semester keeps students and teachers busy and target oriented. The awarding a Degree or Diploma or Certificate is given on the basis of number of credits completed by the student.

CBCS SYSTEM IS OPEN-ENDED, IT PRIORITIZES THE CHOICE OF THE LEARNER: The Choice Based Credit System has been adopted following the global standards to provide student autonomy and flexibility in choosing courses, uniform course curriculum and uniform evaluation system,giving scope for mobility of students to complete their education at different institutions at different times.In this system, a student has a choice to select from the prescribed courses- core, elective or minor or soft skill courses. One can make choices from number of courses from other subjects/disciplines for his/her Inter-department Course.A student doing BA can opt Electronics for his/her Inter-dept Course. Such flexibility was not possible with the old system of education. The purpose of this system is to prepare a student who will have knowledge and skills of other disciplines also, the different streams like Arts Science, Commerce and Law will come closer and help build citizens who will understand the interdependence of different subjects/disciplines and will have holistic approach towards life and its problems.

THE INTRODUCTION OF INTERNAL EXAMS ENSURES REGULAR STUDY AND ATTENDANCE:In the govt run Higher Educational Institutes, Absenteeism is a great problem,a large number of students take admissions and remain absent for long period, The introduction of Internal exams in every semester has ensured regular presence of the students, they have to be in regular touch with the teachers and they have to prepare their assignments and projects or conduct surveys to secure marks by appearing for written and oral presentations for their 30 percent marks, ultimately adding to their credit points(SGPA) and (CGPA). This feature has brought a great change specially in Depts of Arts and Commerce where practical exams are not conducted. It has proved a very significant step to realize UGC's vision of 75% attendance for all students to appear in the final examinations. It has also made the campuses of colleges and universities more vibrant with academic exercises.

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

MULTI ENTRY AND EXIT POINTS ENSURE DIFFERENT ACHEVEMENTS : The greatest drawback of the old education policy was that if a learner took a break from his studies owing to some or the other circumstances, he was not eligible to get a degree. NEP addresses the urgent need of reducing the number of dropouts and adds flexibility to the system. As per the provisions of NEP, a two year Master's programme will be offered to those students who have completed three year Bachelor's programme and a one year programme for those who have done four year UG degree with research.An integrated fiveyear Bachelor/Masters programme will also be offered with option to exit at third year of Bachelor's degree and entry to Masters programme. If some student exits after the first year of Graduation, he will get Undergraduate Certificate, if he leaves after two years of Graduation, he will get Undergraduate Diploma, if he completes three years of Graduation, he will get Bachelor's degree. Bachelor's Degree (Honours/Research) will be for four years. Masters'Degree One/Two years will depend on three/four year's Bachelor degree respectively. After Masters, one can do research for Doctoral degree.

In this way, NEP2022 has rejuvenated the entire education system by focusing on multidisciplinary and flexible learning. The fruits of NEP2022 cannot be reaped until or unless educational institutes embrace change and celebrate resilience.

DR S C HAJELA
PROF, DEPT OF ENGLISH
SHRI JNM PG COLLEGE LUCKNOW
Email:sudheer.hajela@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

लक्ष्य गीतः राष्ट्रीय सेवा योजना

उठें समाज के लिए उठें–उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें–जगें
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दे–2

हम उठें , उठेंगा जग हमारे संग साथियों
हम बढ़े तो सब बढ़ेगें अपने आप साथियों
जमी पर आसमा को उतार दे–2
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दे–2

उदासियों को दूर कर खुशी को बांटते चले
गांव और शहर की दूरियों को पाटते चले
ज्ञान को प्रचार दे प्रसार दे
विज्ञान को प्रचार दे प्रसार दे
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दे–2

समर्थ बाल वृद्ध और नारियां रहे सदा
हरे भरे वनों की शाल ओढ़ती रहे धरा
तरक्कियों की एक नई कतार दे–2
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दे–2

ये जाति धर्म बोलियां बने न शूल रहा की
बढ़ायें बेल प्रेम की अखण्डता की चाह की
भावना से ये चमन निखार दे
सद्भावना से ये चमन निखार दे
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दे–2

उठें समाज के लिए उठें–उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें–जगें
स्वयं सजे वसुन्धरा संवार दे–2

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

प्रार्थना गीत : भारत स्काउट गाइड

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।

हमारे ध्यान आओं, प्रभु आखों में बस जाओं,
अंधेरे दिल में आकर के, परम ज्योति जगा देना।

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागार,
हमें आपस में मिलजुल कर प्रभु रहना सिखा देना।

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा,
सदा ईमान हो सेवा, व सेवकचर बना देना ।

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना,
वतन पर जां फ़िदा करना प्रभु हमकों सिखा देना।

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

झरोखा

महाविद्यालय में विज्ञान संकाय के तत्वाधान में मनाया गया विश्व कम्प्यूटर दिवस ।
2 दिसम्बर 2024

महाविद्यालय के छात्रों ने सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के तत्वाधान में आयोजित अन्तर महाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग के अन्तर्गत किया उत्कृष्ट प्रदर्शन।
9-10 दिसम्बर 2024

महाविद्यालय में अग्निशमन जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन ।
दिनांक-16 दिसम्बर 2024

स्पर्श गंगा दिवस के अवसर पर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई केतत्वाधान में एक दिवसीय सामान्य शिविर का किया गया आयोजन।
17 दिसम्बर 2024

महाविद्यालय में एन०एस०एस० इकाई के तत्वाधान में वीर बाल दिवस के अवसर पर किया गया कार्यक्रम का आयोजन ।
26 दिसम्बर 2024

महाविद्यालय की एन०एस०एस० इकाई के अन्तर्गत स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर एक व्याख्यान माला का किया गया आयोजन।
10 जनवरी 2025

महाविद्यालय में भूगोल विभाग के अन्तर्गत सतत् विकास में युवा कौशल विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का किया गया आयोजन ।
दिनांक-10 जनवरी 2025

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

अखबार से

कंप्यूटर की सकारात्मक उपयोगिता के बारे में बताया

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना के निर्देशन में विज्ञान संकाय के तत्वावधान में विश्व कंप्यूटर साक्षरता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रभारी प्राचार्य डा. गौरव कुमार ने शिक्षा में कंप्यूटर की उपयोगिता तथा डिजिटल माध्यम पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता जंतु विज्ञान विभाग प्रभारी डा. दयाकृष्ण ने कंप्यूटर की सकारात्मक उपयोगिताओं के बारे में बताया। रसायन विज्ञान विभाग प्रभारी डा. साबिर हुसैन ने विश्व कंप्यूटर साक्षरता दिवस पर कंप्यूटर के विभिन्न उपयोगी एवं आयामों जैसे ईमेल, रैम एवं रोम, हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर के बारे में बताया। उन्होंने छात्रों को परीक्षा फॉर्म एवं स्कॉलरशिप फॉर्म स्वयं भरने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. साबिर हुसैन ने किया। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के छात्रों ने अंतर महाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में जीते मेडल।

भिकियासैंण। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के छात्रों ने सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के तत्वाधान में एसएलएम परिसर पिथौरागढ़ में आयोजित अंतर महाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं में मेडल हासिल किए। गोला फेंक प्रतियोगिता में भावेश बिष्ट ने सिल्वर मेडल प्राप्त किया। वहीं 400 मीटर रिले दौड़ में त्रिभुवन दुर्गापाल, हिमांशु जीना, योगेश बिष्ट व भावेश बिष्ट ने संयुक्त रुप से कांस्य पदक प्राप्त किए। छात्रों ने टीम मैनेजर डॉ. राजीव कुमार के निर्देशन में इस प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया था। छात्रों की इस उपलब्धि पर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. शर्मिला सक्सेना ने प्रतिभागी छात्रों को बधाई दी और कहा कि खेल छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, और छात्रों में नेतृत्व एवं एकता की भावना का विकास करते है। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों, कर्मचारियों और छात्र-छात्राओं ने मेडल प्राप्त छात्रों को बधाई दी और भविष्य में भी इसी प्रकार के प्रदर्शन करने हेतु शुभकामनाएं दी।

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में अग्निशमन सुरक्षा जागरुकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन।

भिकियासैंण। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में महाविद्यालय आपदा समिति द्वारा फायर स्टेशन ऑफिस रानीखेत के सहयोग से अग्निशमन सुरक्षा जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय स्टॉफ सहित छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। उक्त कार्यक्रम में अग्निशमन सुरक्षा के विषय में जानकारी दी गई। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना द्वारा वंश नारायण यादव, प्रभारी अग्निशमन अधिकारी रानीखेत एवं उनकी समस्त टीम का धन्यवाद किया तथा आगामी समय में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को अग्निशमन प्रशिक्षण हेतु रानीखेत भेजा जाएगा।

गुरुगोविंद सिंह के साहिबजादों को दी श्रद्धांजलि

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में एनएसएस इकाई के तत्वावधान में वीर बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सिक्खों के दसवें गुरु गुरुगोविंद सिंह के साहिबजादों की शहादत को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। तत्पश्चात वीर बाल दिवस के इस अवसर पर निबंध व पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्र-छात्राओं ने अपनी लेखनी व पोस्टर से वीर साहिबजादों से जुड़े विभिन्न पहलुओं को व्यक्त किया। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान क्रमशः रश्मि भंडारी बीए प्रथम सेमेस्टर, मोहित धौलाखण्डी बीए प्रथम सेमेस्टर एवं दीपा नैलवाल बीए प्रथम सेमेस्टर ने प्राप्त किया। जबकि पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कार्तिक कुमार बीए प्रथम सेमेस्टर व द्वितीय स्थान हर्षिता बीए प्रथम सेमेस्टर ने प्राप्त किया। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डा. दीपा लोहनी ने वीर बाल दिवस के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला एवं गुरु गोविंद सिंह एवं उनके चार साहिबजादों अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह के अदम्य साहस व देश-प्रेम से छात्र-छात्राओं को अवगत कराया। कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. शर्मिला सक्सेना के मार्गदर्शन में डा. दीपा लोहनी ने संचालित किया। इस दौरान प्राध्यापक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहीं।

स्वयं सेवियों को अच्छा नागरिक बनने को किया प्रेरित

भिकियासैंण। डाक्टर प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में एनएसएस इकाई के तत्वावधान में एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर मे महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के दिशा निर्देशन में एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डा. दीपा लोहनी ने संचालित किया।

वर्तमान में स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डा. विश्वनाथ पांडे एवं प्राध्यापकों ने किया। प्रभारी प्राचार्य डा. विश्वनाथ पांडे ने अपने प्रेरणादायक संबोधन से स्वयंसेवियों का उत्साहवर्धन किया। अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक डा. कौशल अग्रवाल ने स्वामी जी के संपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय युवा दिवस की महत्ता से स्वयं सेवियों को अवगत कराया। हिंदी विभाग के प्राध्यापक डा. सुभाष चंद्र ने अपने व्याख्यान में स्वामी जी की शिकागो यात्रा के विषय में जानकारी देते हुए उनसे जुड़े प्रेरक प्रसंगों को स्वयं सेवियों के साथ साझा किया। कार्यक्रम अधिकारी डा. दीपा लोहनी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का स्थान भारतीय इतिहास में स्मरणीय है। उनके कालजयी विचार मानव जाति को सही मार्ग दिखाते रहेंगे।

इस दौरान डा. कौशल कुमार, डा. गौरव कुमार, डा. दयाकृष्ण, डा. इला बिष्ट, डा. सुभाष चंद्र, डा. साबिर हुसैन, डा. दिनेश कुमार, डा. राजीव कुमार, डा. जोगेंद्र चन्याल, विरेंद्र राम, शेर सिंह, महेश चंद्र, गौरव कुमार, प्रदीप कुमार आदि रहे।

कार्यशाला में जलवायु परिवर्तन पर विचार रखे

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में सतत विकास में युवा कौशल विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम का प्रारंभ महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डा. विश्वनाथ पांडे ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रभारी प्राचार्य ने सतत विकास के लिए संसाधनों व जलवायु परिवर्तन पर अपने विचार रखे। अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक डा. कौशल अग्रवाल ने हरित क्रांति, पर्यावरण, स्वच्छ ऊर्जा सतत विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डा. सुभाष चंद्र ने ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन विखंडन जैसी अनेक चुनौतियों को सतत विकास का एक्शन प्लान बताया। कार्यशाला का संचालन कर रहे डा. जोगेंद्र चन्याल ने छात्र-छात्राओं को कार्यशाला के उद्देश्य बताए। इस दौरान डा. इला बिष्ट, डा. दयाकृष्ण, डा. दीपा लोहनी, डा. साबिर हुसैन, डा. दिनेश कुमार, शेर सिंह, महेश बलोदी, गौरव कुमार, प्रदीप कुमार सहित समस्त कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

मीमांसा

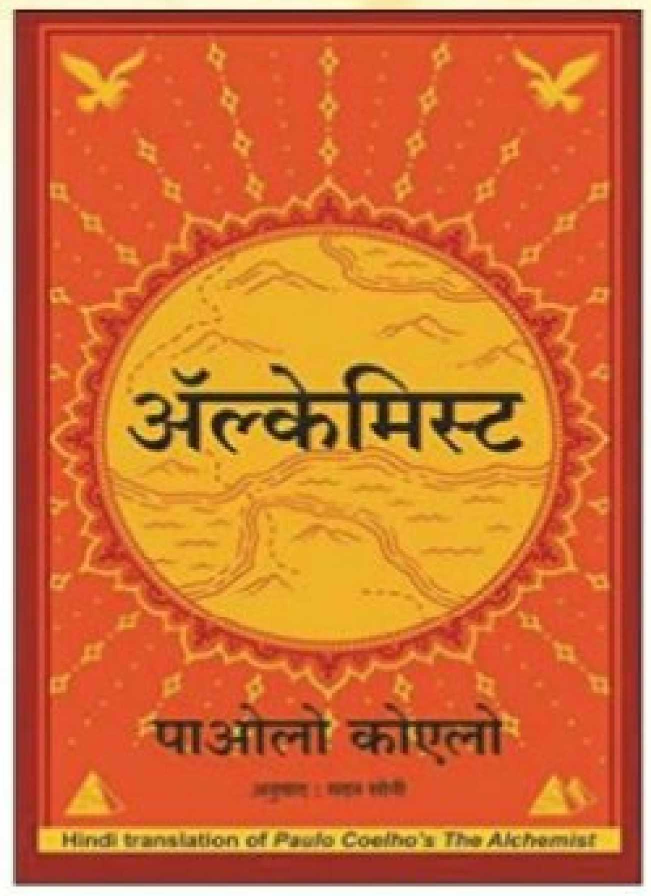

द अल्केमिस्ट (The Alchemist) पाउलो कोएल्हो द्वारा रचित एक शानदार पुस्तक है। यह एक प्रेरणादायक पुस्तक है जो जीवन के उद्देश्य, नियति, सपनों के आध्यात्मिक पक्षों का व्याख्यान बड़े ही रोचक ढंग से करती है। यह पुस्तक सेंटियागो नामक एक चरवाहे की कहानी है जो अपने जीवन का लक्ष्य तलाशने के लिये अपनी जीवन यात्रा शुरू करता है। यह पुस्तक बेहद रोचक ढंग से लिखी गई है जो मनुष्य जीवन में लक्ष्य, आशा और आध्यात्म के महत्व को बतलाती व सिखलाती है। इस पुस्तक में अपने लक्ष्य को पूरे मनोयोग से चाहने के लिये कहा गया है। यदि कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को पूरे मनोयोग से चाहता है तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूरा योगदान देता है और अन्त में व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेता है। अतः लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उसे पूरे मनोयोग से चाहना **बहुत अहम् है**

डॉ0 इला बिष्ट,
सम्पादक, ई–पत्रिका गगास
असि0 प्रो0 समाजशास्त्र

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

प्राचार्य

प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना

प्राध्यापक वर्ग वाणिज्य संकाय

डॉ० राजीव कुमार (असि० प्रोफेसर)

श्री गौरव कुमार (असि० प्रोफेसर)

कला संकाय

डॉ० विश्वनाथ पाण्डेय (असि० प्रोफेसर- अर्थशास्त्र)

श्री कौशल कुमार (असि० प्रोफेसर- अंग्रेजी)

डॉ० सुभाष चन्द्र आर्या (असि० प्रोफेसर हिन्दी)

डॉ० दीपा लोहनी (असि० प्रोफेसर इतिहास)

डॉ० इला बिष्ट (असि० प्रोफेसर समाजशास्त्र)

श्री दिनेश कुमार (असि० प्रोफेसर राजनीति विज्ञान)

डॉ० परितोष उप्रेती (असि० प्रोफेसर- भूगोल)

विज्ञान संकाय

डॉ० दयाकृष्णा (असि० प्रोफेसर- जन्तु विज्ञान)

श्री साबिर हुसैन (असि० प्रोफेसर- रसायन विज्ञान)

वनस्पति विज्ञान- रिक्त

गणित - रिक्त

भौतिक विज्ञान- रिक्त

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

कार्यालय

श्री कैलाश चन्द्र जोशी (प्रधान सहायक)
वरिष्ठ सहायक- (रिक्त)
श्री गौरव कुमार (कनिष्ठ सहायक)

प्रयोगशाला

श्री विरेन्द्र राम (प्रयोगशाला सहायक-जन्तु विज्ञान)
श्री शेर सिंह (प्रयोगशाला सहायक भौतिक विज्ञान)
प्रयोगशाला सहायक - भूगोल (रिक्त)
प्रयोगशाला सहायक रसायन विज्ञान (रिक्त)
प्रयोगशाला सहायक वनस्पति विज्ञान (रिक्त)

पुस्तकालय

सहायक पुस्तकालयध्यक्ष - (रिक्त)
श्री महेश चन्द्र - (पुस्तकालय लिपिक)

उपनल कर्मचारी

श्री प्रदीप कुमार- कनिष्ठ सहायक
श्री पूरन सिंह जलाल-अनुसेवक
श्री श्याम सुन्दर - अनुसेवक
श्री सतीष कुमार - स्वच्छक / पर्यावरण मित्र
श्री सुरेश चन्द्र - चौकीदार

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

Info Desk

College Website- https://gdcbhikiyasain.in/

College Fb ID- https://www.facebook.com/photo/?

fbid=525965566878099&set=a.525965573544765

College youtube - UCV7z6yOzKf2rhW4jz9qzBfA

SSJU Website- https://www.ssju.ac.in/

Routes to Roots- https://r2rdigital.routes2roots.com/

Skill Development Programme- https://www.msde.gov.in/

Anti-Ragging-https://www.antiragging.in/a davit_aliated_form.php

Anti Drug- https://pledge.mygov.in/fightagainstdrugabuse/

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner